

(1) विभाग का परिचय (लगभग 100 शब्दों में विभाग के कार्यों का वर्णन किया जायें)

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात प्रारम्भिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण तथा निरक्षरता उन्मूलन द्वारा साक्षरता/प्रौढ़ शिक्षा की समुचित व्यवस्था करना, ये दो हमारे मुख्य लक्ष्य रहे हैं। अतः राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 को अंगीकृत करने के समय शिक्षा तथा प्रौढ़ शिक्षा प्रणाली व निरक्षरता उन्मूलन का स्वरूप इतना बढ़ गया था कि राष्ट्रीय तथा राज्य स्तर की संस्थाओं द्वारा समर्थन प्राप्त करना उपयुक्त हो गया। कारणवश: राष्ट्रीय शिक्षा कार्यक्रम में डायट के विस्तार तथा गुणवत्ता को बढ़ाने की बात कही गई, जो अकादमिक समर्थन विकेन्द्रीयकृत अत्यन्त आवश्यक हो गया था। फलस्वरूप उक्त लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु जनपद स्तर पर जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट) की सरकार द्वारा स्थापना की गयी।

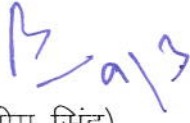
डायट के प्रमुख उद्देश्य:—

- प्रारम्भिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण में सहयोग प्रदान करना।
- विद्यालयों की ठहराव क्षमता में वृद्धि करना।
- विद्यार्थियों की उपलब्धि-स्तरो का उन्नयन करना।
- शिक्षक के स्तर को समुन्नत करना।
- जनपद में स्थानीय स्तर पर शैक्षिक समस्याओं के पहचान करने और उनके समाधान हेतु क्रियात्मक शोध करना तथा सम्बन्धित इकाईयों को सहयोग/मार्गदर्शन प्रदान करना।
- राज्य स्तर से लेकर ग्राम स्तर तक की शिक्षण संस्थाओं के बीच में कड़ी के रूप में कार्य करना।

डायट के सात कार्य विभाग:—

1. सेवापूर्व शिक्षक—प्रशिक्षण विभाग
2. कार्यानुभव विभाग
3. जिला संसाधन इकाई (वैकल्पिक तथा अनौपचारिक शिक्षा हेतु)
4. सेवारत शिक्षक—प्रशिक्षण विभाग
5. पाठ्यक्रम साभग्री निर्माण एवं मूल्यांकन विभाग
6. शैक्षिक तकनीकी विभाग
7. नियोजन तथा प्रबन्धन विभाग

भवदीय


(भीम सिंह)

प्राचार्य

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान
छोटा मवाना मेरठ।